मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यसुधा

वर्ष: 5, अंक 103, फरवरी(द्वितीय), 2021

बसंतपंचमी (माँ सरस्वती का पूजन)

बसंतपंचमी (माँ सरस्वती का पूजन)

ओदाजी

बसंत पंचमी का दिन माघ शुक्ल पंचमी इस वर्ष 16 फरवरी 2021 को है ये दिन विद्यार्थियों के लिए (ज्ञान और विद्या के उपासको के लिए) बहुत ही महत्त्व रखने वाला है। इस दिन विद्यार्थी माँ सरस्वती का पूजन और अर्चन करते है। माँ सरस्वती के गुणों को जानने और उनसे प्रेरणा लेने का दिन है। मिलकर मन्त्र प्रार्थना करते है

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥1॥

भाव : जो कुंद फूल, चंद्रमा, हार की तरह धवल है शुभ्र (श्वेत) वस्त्र को पहनती है जिनके हाथ में, वीणा, दंड शोभावान है जो श्वेत कमल आसन में बैठी है जिनकों ब्रह्मा, विष्णु, शिव वंदना करते है वो देवी जड़ता को दूर करने वाली मेरी रक्षा करे। एक अन्य श्लोक में, ये कहाँ है की ***वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्*** वीणा, पुस्तक को धारण करने वाली अभय देने वाली आप जड़ता और अन्धकार को हरो।

उपरोक्त वर्णित श्लोक माता के गुणों और उनके व्यक्तित्व का प्रदर्शन है और विद्या के उपासकों अर्थात विद्यार्थियों के लिए ये एक प्रेरणा का स्रोत है वो प्रेरणा निम्न में है जैसे की ....

1. ***कुंद फूल, चंद्रमा, हार की तरह धवल*** : माता सरस्वती ज्ञान की देवी है और ज्ञान सदैव उज्जवल होता है और उसका स्वभाव होता है अज्ञानता को हारना और अज्ञान होता है काला, तो उज्ज्वलता अन्धकार को हर लेती है तो जो विद्या के उपासक होते है वो सदैव ज्ञान की कसौटी को ही जीवन में चयन का आधार बनाते है।
2. ***शुभ्रवस्त्रावृता*** – श्वेत वस्त्र का अभिप्राय है की जब ज्ञान आता है तो अहंकार की समाप्ति हो जाती है और जीवन निर्मलता और कोमलता से पूर्ण हो जाता है।
3. ***वीणावरदण्डमण्डितकरा*** - जीवन में **वीणा** का महत्व है ये सरस्वती माँ ही बताती है वो क्या है वो ये है की यदि जीवन में संगीत लाना है तो वीणा को लाओ अर्थात ईश्वारिय संगीत को जीवन में स्थान दो और वीणा तभी बजती है जब वो मध्य में हो अर्थात उसके तार न तो अधिक कसे हो न ही अधिक ढीले हो। जीवन में अनुशासन (***दण्ड***) हो और सहजता हो तो **वीणा** के तार जब मध्य में होंगे तो जीवन में संगीत अवश्य गूंजेगा।
4. ***श्वेतपद्मासना*** – श्वेत पदमासन या श्वेत कमल का आसन अर्थात आपको अवसर मिलगा जीवन में योग की चरम समाधी का ***श्वेतपद्मासना*** ये संकेत देता है।
5. **वन्दिता** – प्रत्येक बिंदु प्रकृति का आप की वंदना करता है आप ही सर्जन, पालन और विसर्जन के गुण अपने भीतर समाई हुई हो।

6. ***सा मां पातु*** **-** माया रूपी जड़ता और अज्ञान से हे माँ मेरी रक्षा करो क्योंकि आपकी माया अति प्रबल है और मैं संसारी जीव हूँ मेरी रक्षा करो माँ रक्षा करो।
7. ***पुस्तक-धारिणी –*** माता का एक गुण ये भी है वो पुस्तक को धारण करके मनुष्य को स्वाध्याय की प्रेरणा देती है विचारक व्यक्तियों के एक गुण होता है की वो पुस्तकों से मित्रता रखते है और विभिन्न विचारों जानकारियाँ को एकत्र करके उनके मध्य सामजस्य बिठाकर नए अविष्कार को जन्म देते है या उसके लिए भूमिका उत्पन्न करते है ये औज बाल मनुष्य के अन्दर माता के द्वारा ही प्रदान होता है और जो व्यक्ति माता की संगति करेगा उसको ये गुण विरासत में मिलगा।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें